Self Respect

May 16th,2014

यह नॉलेज तुम बच्चों को ही है | दुनिया में और कोई भी यह नॉलेज नहीं जानते हैं |

तुम अभी जानकार, नॉलेजफुल बने हो | बाकी सारी दुनिया अनजान है |

यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, सो तुम्हारे सिवाए दुनिया में कोई भी जानता नहीं है |अन्दर में यह ज्ञान डांस होना चाहिए |

हम सो ब्राह्मण फिर देवता बनेंगे फिर हम उतरते-उतरते नीचे आते हैं ।

यह पढ़ाई ईश्वरीय है ।

भल कहते हैं परमात्मा ज्ञान का सागर है, परन्तु वह कौन है, कैसे वह जादूगर है, यह किसको भी पता नहीं है ।

अभी बाप आकर देवता बनाते हैं । अन्दर में कितनी ख़ुशी होनी चाहिए ।

एक बाप ही नॉलेजफुल है, हमको पढ़ाते भी हैं । यह सिर्फ़ तुम बच्चे ही जानते हो ।

यह है खेल । तुम फिर भी ऐसे ही खेल करेंगे । देवी-देवता बनेंगे ।

हम सो देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य फिर शूद्र ।

यह भी जानते हैं कल्प पहले जिन्होंने समझा था वही समझेंगे | दैवी परिवार वाले जितने बनने वाले होंगे उन्हों को ही धारणा होगी |

तुम जानते हो हम श्रीमत पर राजधानी स्थापन करते हैं |

बाप सब ज्ञान सुना रहे हैं |तुम भी सुना रहे हो |

बाप कैसे बैठ तुमको समझाते हैं – यह तुम बच्चों के सिवाए और कोई को पता ही नहीं है |

बीज रूप बाप बैठ तुमको ज्ञान देते हैं |

वह जड़ बीज तो वर्णन कर नहीं सकेंगे | तुम वर्णन करते हो | सब बातों को समझ सकते हो | इस बेहद के झाड़ को कोई भी समझते नहीं हैं |